साधो भाई या मन कि बदमाशी अपनी इज्जत ने धूल में मिलावे

साधो भाई या मन कि बदमाशी,
अपनी इज्जत ने धूल में मिलावे,
गणी करावे हांसी।bd।

यो मन तो भाई तीर्थ करावे,
ले जावे मथुरा काशी,
यो ही मन जेल में बिठावे,
गले लगावे फांसी।bd।

यो मन तो पूजा करावे,
गले फूल पहरासी,
यो ही मन जूता मेलावे,
धौला में धूलो नकासी।bd।

यो मन तो भाई हाथी पर बिठावे,
गणा चंवर ढुलासी,
यो ही मन गधा पर बिठावे,
मुंडो कालो करासी।bd।

यो मन बस कोई बिरला किदो,
वाको नाम अमर रह जासी,
मन जो भान्दू घूम गयो तो,
लख चौरासी में जासी।bd।

गोकुल स्वामी सतगुरु देवा,
भीण भीण कर समझासी,
लादूदास कहे दु:ख नरक को,
सहज सहियो नही जासी।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

साधो भाई या मन कि बदमाशी,
अपनी इज्जत ने धूल में मिलावे,
गणी करावे हांसी।bd।

भजन गायक – चम्पा लाल प्रजापति।
मालासेरी डूँगरी 89479-15979

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com